International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पारिवारिक वातावरण के सम्बन्ध में महिला किशोरों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

किरन कर्नाटक[1], दीपा पाण्डे[2]

[1]सहायक प्रवक्ता, ,एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय हल्द्वानी, मनोविज्ञान विभाग
[2]शोध छात्रा, एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय हल्द्वानी, मनोविज्ञान विभाग

सारांश:

पारिवार को बालक के समाजीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक के रूप में नामित किया जा सकता है | घर का माहौल और पारिवारिक रिश्ते, बालक के विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं | बालक अपने माता -पिता से सामाजिक गुणों का पहला पाठ सीखता है | जानबूझ कर या अनजाने में, वह अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार का अनुकरण करता है और इस प्रकार कई अच्छी या बुरी विशेषताओं को अपनाता है जो उसके जीवन के अंत तक उसके साथ रहती हैं | परिवार का आकार, परिवार के बीच आपसी संबंध, माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों का रवैया, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और समाज में परिवार की स्थिति, परम्पराएं, संस्कृति, मूल्य और परिवार के आदर्श – ये सभी बालक के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करते हैं| एक ऐसा परिवार, जो एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण प्रदान करता है और जहाँ बालकों की बुनियादी जरूरतें पूरी होती हैं, सामाजिक रूप से संतुलित व्यक्तित्व पैदा करता है, जबकि वे घर जहाँ पारिवारिक रिश्ते तनावपूर्ण होते हैं और बड़ों में नकारात्मक सामाजिक विशेषताएं होती हैं, उनमें बच्चों का पालन-पोषण ठीक से नहीं होता है और परिणामस्वरूप सामाजिक रूप से अवांछनीय और नकारात्मक व्यक्तित्व पैदा होता है | इसलिए बालकों के समुचित विकास के लिए परिवार में उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराने में माता-पिता का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है| समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें एक सुखी और खुशहाल जीवन की ओर ले जाती है |

स्वस्थ समायोजन व्यक्ति के जीवन और शिक्षा में सामान्य विकास के लिए अति आवश्यक है| शिक्षा किशोरों को वर्तमान और भविष्य की विभिन्न परिस्थितियों में स्वस्थ समायोजन के लिए प्रशिक्षित करती है | इस तर्क का तात्पर्य है कि शिक्षा और समायोजन परस्पर जुड़े हुए हैं और एक दूसरे के पूरक हैं| इसलिए शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे किशोरों के समायोजन की प्रव्रत्तियों और उनके अच्छे मानसिक स्वास्थ में योगदान करने वाले कारकों को समझें | किशोरों को समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है, किशोरावस्था में होने वाले तीव्र परिवर्तन इन समस्याओं का प्रमुख कारण बनते हैं | एक किशोर में स्थायित्व एवं समायोजन का अभाव होता है तथा इनका जीवन बहुत अधिक भावनात्मक होता है | बालक की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति कभी सरलता से हो जाती है और कभी उसमें बाधा उत्पन्न होती है, जिस कारण किशोरों में तनाव उत्पन्न होता है | किशोर जिन व्यक्तियों एवं परिस्थियों के साथ प्रसन्नता व संतुष्टि का अनुभव करते हैं उनके साथ किशोर का समायोजन अच्छा होता है तथा जिन व्यक्तियों एवं परिस्थियों के साथ वह अप्रसन्नता व असंतुष्टि का अनुभव करते हैं उनके साथ किशोर का समायोजन अच्छा नहीं होता है | किसी भी बालक का वर्तमान एवं भविष्य सुखी और आनन्ददायक तभी हो सकता है, जब उसका व्यवहार समायोजित हो |

प्रस्तुत अध्ययन का उददेश्य महिला किशोरों (14-17 वर्ष) के समायोजन स्तर का पारिवारिक वातावरण के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना है | अध्ययन की योजना के अनुसार 80 महिला किशोरों (40 अनुकूल पारिवारिक वातावरण तथा 40 प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण) का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया | समायोजन स्तर के मापन हेतु " प्रो. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह निर्मित समायोजन मापनी (AISS) " का प्रयोग किया गया | किशोरों के समायोजन स्तर के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु t – परीक्षण का प्रयोग किया गया | अध्ययन परिणाम में किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर के मध्य 0.05 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया (t = 7.70) | परिणामों से स्पष्ट है कि अनुकूल पारिवारिक वातावरण तथा प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर होता है |

की वर्ड्स: किशोरावस्था, समायोजन, पारिवारिक वातावरण |

प्रस्तावना: किशोर किसी भी समाज की वास्तविक पूँजी हैं और समाज एवं राष्ट्र की भलाई के लिए इसे सुरक्षित एवं संरक्षित किया जाना चाहिए | किशोरावस्था बाल-काल की अंतिम अवस्था होती है| सम्पूर्ण बाल विकास में इस अवस्था का बहुत अधिक महत्व है | यह अवस्था शारीरिक और मानसिक उथल पुथल से भरी होती है| किशोरावस्था लोगों के जीवन में एक कठिन विकास अवधि का प्रतिनिधित्व करती है| किशोरावस्था में किशोर को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है| ये समस्याएं किशोरों के व्यवहार को सरलता से जटिलता की ओर ले जाती हैं| वर्तमान समय में किशोरों के समक्ष समस्याएं और बाधाएं अपेक्षाकृत अधिक हैं क्योंकि प्रतिस्पर्धा के कारण उनका जीवन अधिक गतिशील और जटिल होता जा रहा है| इन समस्याओं से किशोर जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है| उसके व्यवहार की प्रकृति इसी पर निर्भर करती है|

समायोजन की अवधारणा सबसे पहले डार्विन ने दी थी जिन्होंने इसे भौतिक दुनिया में जीवित रहने के लिए एक अनुकूलन के रूप में इस्तेमाल किया था| मनुष्य अन्य व्यक्तियों पर आश्रित होने से उत्पन्न होने वाली शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक मांगों को समायोजित करने में सक्षम है| समायोजन घर की जीवन स्थितियों में, स्कूल में, वयस्क होने पर कार्यस्थल में और वृद्धावस्था में एक संगठनात्मक व्यवहार है| समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमें एक सुखी और खुशहाल जीवन की ओर ले जाती है| स्वस्थ समायोजन व्यक्ति के जीवन और शिक्षा में सामान्य विकास के लिए अति आवश्यक है| शिक्षा किशोरों को वर्तमान और भविष्य की विभिन्न परिस्थितियों में स्वस्थ समायोजन के लिए प्रशिक्षित करती है| इस तर्क का तात्पर्य है कि शिक्षा और समायोजन परस्पर जुड़े हुए हैं और एक दूसरे के पूरक हैं| इसलिए शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे किशोरों के समायोजन की प्रव्रत्तियों और उनके अच्छे मानसिक स्वास्थ में योगदान करने वाले कारकों को समझें| समायोजन वह व्यवहार प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अथवा अन्य जीव अपनी विभिन्न आवश्यकताओं और उन आवश्यकताओं की पूर्ति में उत्पन्न होने वाली बाधाओं के बीच संतुलन बनाए रखते है| प्रत्येक जीवित प्राणी के सामने किसी न किसी प्रकार की परेशानियाँ तथा समस्याएँ आती रहती हैं| इन सभी समस्याओं को तथा जीवन की चुनौतियों को प्राणी किस प्रकार स्वीकार करता है इसी से उसकी समायोजन क्षमता का पता चलता है| किशोरों को समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है, किशोरावस्था में होने वाले तीव्र परिवर्तन इन समस्याओं का प्रमुख कारण बनते हैं| एक किशोर में स्थायित्व एवं समायोजन का अभाव होता है तथा इनका जीवन बहुत अधिक भावनात्मक होता है| परमेश्वरन (1957) ने किशोरों और वयस्कों की तुलना विभिन्न व्यक्तित्व परिवर्त्यों पर की | इस अध्ययन में यह देखा गया कि विभिन्न क्षेत्रों ; जैसे – दूसरों पर निर्भरता, प्रभाव, प्रविष्टियाँ, भाई बहनों के रिश्ते तथा विषमलैंगिक सम्बन्ध में किशोरों की अपेक्षा वयस्क अधिक समायोजित होते हैं| एक अध्ययन (एस. डी. सिंह, 1961) में यह देखा गया कि

अधिकाँश किशोर नैतिक तथा धार्मिक समस्याओं से अधिक परेशान रहते हैं| एक अन्य अध्ययन (कक्कड़ 1967) में देखा गया कि किशोरों में, समायोजन की समस्याएँ स्कूल की चिन्ता के कारण भी होती हैं| रेड्डी 1971 ने अपने अध्ययन द्वारा यह बताया कि दुर्बल आत्म-प्रतिमा, हीनता की भावना, परिवार के प्रति अरुचि आदि कुछ ऐसे कारक हैं जो किशोरों के समायोजन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते हैं|

यदि व्यक्ति अपनी योग्यताओं के अनुरूप ही अपनी आकांक्षाओं का निर्धारण करता है तो वह सहजता से प्रत्येक परिस्थिति के साथ समायोजन करने में सफल रहता है| किन्तु इसके विपरीत यदि व्यक्ति की आकांक्षाएं उसकी योग्यता से अधिक अथवा बहुत कम होती हैं तो उसका समायोजन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है| उदाहरण के लिए – यदि किसी छात्र की सांख्यिकीय अभिक्षमता निम्न स्तर पर है किन्तु वह जीव विज्ञान के स्थान पर गणित विषय का चयन करता है तथा उसे अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती तब परिणामस्वरूप उसका व्यवहार कुसमयोजित हो जाता है| इस प्रकार व्यक्ति का आकाँक्षा स्तर उसके समायोजन को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है|

बोरिंग तथा उनके साथियों के अनुसार, "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्कताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थियों में संतुलन रखता है| समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है| बालक चारों ओर के वातावरण में उपस्थित व्यक्तियों एवं वस्तुओं के संपर्क में आता है| इनमें से कुछ कम तथा कुछ अधिक महत्वपूर्ण हो सकती हैं| किशोर जिन व्यक्तियों एवं परिस्थियों के साथ प्रसन्नता व संतुष्टि का अनुभव करते हैं उनके साथ किशोर का समायोजन अच्छा होता है तथा जिन व्यक्तियों एवं परिस्थियों के साथ वह अप्रसन्नता व असंतुष्टि का अनुभव करते हैं उनके साथ किशोर का समायोजन अच्छा नहीं होता है| किसी भी बालक का वर्तमान एवं भविष्य सुखी और आनन्ददायक तभी हो सकता है, जब उसका व्यवहार समायोजित हो| समायोजन एक मत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है| प्रत्येक जीवित प्राणी के जीवन में कुछ न कुछ समस्याएँ आती रहती हैं व्यक्ति इन समस्याओं का समाधान किस प्रकार करता है यह उसके समायोजन पर काफी हद तक निर्भर करता है|

समायोजन बच्चे के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समायोजन एक गतिशील और निरंतर प्रक्रिया है। एक खुशहाल और समृद्ध जीवन जीने के लिए समायोजन एक पूर्व-अपेक्षित शर्त है। समायोजन शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों जैसी जरूरतों के बीच संतुलन बनाए रखने की एक प्रक्रिया है। किशोरावस्था व्यक्ति के विकास की सबसे महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण अवधि है। यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सेक्स और सामाजिक दृष्टिकोण में तेजी से क्रांतिकारी परिवर्तनों की अवधि है। यह तनाव और तूफान का एक दौर है जो किशोरों को अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना करने के लिए बनाता है। यह एक संक्रमण अवधि है जिसके दौरान वे कई नई आदतों, व्यवहारों को सीखते हैं और कुछ पुरानी आदतों को छोड़ देते हैं। इस अवधि में शारीरिक, मानसिक और सामाजिक शक्तियों का संतुलन खो जाता है और परिणाम यह होता है कि व्यक्ति को अपने स्वयं के साथ, परिवार के साथ और बड़े पैमाने पर समाज के साथ नया समायोजन करना पड़ता है। कुछ किशोर इन चुनौतियों को सकारात्मक रूप से बातचीत नहीं करते हैं और व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं की ओर ले जाते हैं जो उनके कुसमायोजन की ओर ले जाते हैं। अधिकांश छात्र कुंठाओं, संघर्षों, परिसरों, चिंताओं और चिंताओं से पीड़ित हैं। वे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और अन्य समायोजन में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

सुसमायोजित व्यक्ति की विशेषताएं –

एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति अपने शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक कल्याण के संदर्भ में पूर्ण समायोजन का आनन्द लेता है| उसकी दैहिक संरचना, शारीरिक विकास, शक्ति और क्षमताओं के संदर्भ में सुरक्षित और संतुष्ट महसूस करता है| एक सुसमायोजित व्यक्ति अच्छी तरह से संतुलित भावनात्मक व्यवहार प्रदर्शित करता है| वह परिस्थिति की आवश्यकताओं और अपने स्वयं के कल्याण के अनुसार वांछित भावनाओं को उचित मात्रा में व्यक्त करने में सक्षम होता है| एक अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति सामाजिक रूप से परिपक्व व्यक्ति है| सामाजिक योग्यता और सामाजिक दायित्वों के संदर्भ में उसके पास आवश्यक विकास संभावनाएं हैं| वह अपने सामाजिक वातावरण को जानता है और सामाजिक जीवन की मांगों के लिए स्वयं को समायोजित करने की इच्छा और क्षमता रखता है | स्वयं को नापसंद करना कुसमायोजन का एक विशिष्ट लक्षण है| एक समायोजित व्यक्ति में स्वयं के साथ-साथ दूसरों के लिए भी सम्मान होता है| एक सुसमायोजित व्यक्ति की आकांक्षा का स्तर उसकी अपनी शक्तियों और क्षमताओं की तुलना में न तो बहुत कम होता है और न ही बहुत अधिक होता है| ऐसे व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं, जैसे जैविक, भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताएं पूरी तरह से संतुष्ट होती हैं| वह भावनात्मक लालसा और सामाजिक अलगाव से ग्रस्त नहीं होता है| वह यथोचित रूप से सुरक्षित महसूस करता है और अपने आत्मसम्मान को बनाए रखता है| एक सुसमायोजित व्यक्ति जानता है कि वस्तुओं, व्यक्तियों या गतिविधियों में अच्छाई की सराहना कैसे की जाती है | वह कमजोरियों और दोषों की खोज करने की कोशिश नहीं करता है | उसका अवलोकन आलोचनात्मक या दंडात्मक नहीं होता है| वह लोगों को पसंद करता है, उनके गुणों की प्रशंसा करता है और उनका स्नेह जीतता है |

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को एक सुखी और खुशहाल जीवन की ओर ले जाती है | यह व्यक्ति को अपने पर्यावरण की स्थितियों में वांछनीय परिवर्तन लाने की शक्ति और क्षमता प्रदान करता है | समायोजन व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करता है | यह व्यक्ति की स्थिति की मांगों के अनुसार उसे जीवन के तरीके को बदलने के लिए राजी करता है |

पारिवारिक वातावरण :

पारिवारिक वातावरण का अर्थ है माता-पिता और बच्चों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध| परिवार एक बच्चे के सर्वांगीण विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है| बच्चे के आसपास के मानवीय तत्वों को वातावरण कहा जाता है| इसमें परिवार की सामाजिक, शारीरिक, तथा भावनात्मक गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं | परिवार के सदस्य सामाजिक संस्कृति को बनाये रखने में एक दूसरे के प्रति सामाजिक भूमिका निभाते हैं| पारिवारिक वातावरण वह होता है जिसमें बालक परिवार के अन्य सदस्यों के साथ जैविक, भौतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, भावनात्मक, संरचनात्मक तथा पोषक रूप में अंतःक्रिया करता है | व्यक्तियों का चरित्र, व्यवहार, आदतें, रुचियाँ, तथा जैविक, सामाजिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास का प्रत्येक पहलू परिवार के वातावरण की प्रकृति और प्रकार पर निर्भर करता है | फिफ्फ़र और आयलवर्ड (1990) के अनुसार, पारिवारिक वातावरण बच्चों के संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास को प्रभावित करता है, जो उसके आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, व्यक्तित्व विशेषताओं, समस्याओं का सामना करने का कौशल, शैक्षणिक प्रेरणा और सफलता को प्रभावित करता है | कई शोधों के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि प्यार, देखभाल, सुरक्षित, सुसंगत और स्थिर घरेलू वातावरण में रहने वाले बच्चों में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, भावनात्मक तथा नैतिक रूप से अच्छी तरह से विकसित होने की संभावना अधिक होती है |

पारिवार को बालक के समाजीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक के रूप में नामित किया जा सकता है | घर का माहौल और पारिवारिक रिश्ते, बालक के विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं | बालक अपने माता -पिता से सामाजिक गुणों का पहला पाठ सीखता है| जानबूझ कर या अनजाने में, वह अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार का अनुकरण करता है और इस प्रकार कई अच्छी या बुरी विशेषताओं को अपनाता है जो उसके जीवन के अंत तक उसके साथ रहती हैं | परिवार का आकार, परिवार के बीच आपसी संबंध, माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों का रवैया, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और समाज में परिवार की स्थिति, परम्पराएं, संस्कृति, मूल्य और परिवार के आदर्श – ये सभी बालक के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करते हैं | एक ऐसा परिवार, जो एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण प्रदान करता है और जहाँ बालकों की बुनियादी जरूरतें पूरी होती हैं, सामाजिक रूप से संतुलित व्यक्तित्व पैदा करता है, जबकि वे घर जहाँ पारिवारिक रिश्ते तनावपूर्ण होते हैं और बड़ों में नकारात्मक सामाजिक विशेषताएं होती हैं, उनमें बच्चों का पालन-पोषण ठीक से नहीं होता है और परिणामस्वरूप सामाजिक रूप से अवांछनीय और नकारात्मक व्यक्तित्व पैदा होता है | इसलिए बालकों के समुचित विकास के लिए परिवार में उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराने में माता-पिता का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है |

घर का वातावरण माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार और आचरण के साथ-साथ घर में प्रचलित गैर-अनुकूल वातावरण, बच्चे को अधूरेपन की ओर ले जा सकता है | बालक अपने माता-पिता के आपसी संघर्ष, तनाव, संदेह, अविश्वास और झगड़े के कारण कुसामयोजित व्यक्तित्व विकसित कर सकता है | इस प्रकार के वातावरण में बालक पठन-पाठन से संबंधित गतिविधियों को सम्पन्न करने में कठिनाई का अनुभव करता है | यदि इस प्रकार की परिस्थितियाँ लगातार बनी रहती हैं तो बालक पढ़ाई में पिछड़ जाता है जिससे उसे अपने शिक्षकों का सामना करने और कक्षाओं में भाग लेने में रुचि नहीं रह जाती है |

मानव जीवन के अस्तित्व और निरन्तरता और विभिन्न व्यक्तित्व लक्षणों के विकास के लिए गृह पर्यावरण सबसे महत्वपूर्ण संस्था है | एक आदर्श घर का वातावरण वह होता है जहाँ वांछित व्यवहार को मजबूत करने के लिए उचित इनाम दिया जाता हो, बच्चे के प्रति गहरी रुचि और प्यार हो, अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के अवसरों का प्रावधान हो, जहाँ माता-पिता बच्चे को अनुशासित करने के लिए काम प्रतिबंध लगाते हैं, शारीरिक और भावात्मक दंड का इष्टतम उपयोग होता है, जहाँ बच्चों को माता-पिता की इच्छाओं और अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है |

अध्ययनों से पता चलता है कि माता-पिता की उच्च भागीदारी उच्च उपलब्धि की ओर ले जाती है और माता-पिता की काम भागीदारी कम उपलब्धि की ओर ले जाती है (आहूजा और गोयल 2005) | यह देखा गया है कि अधिकांश बच्चे जो सफल और अच्छी तरह से समायोजित होते हैं वे उन परिवारों से आते हैं जहाँ बच्चों और उनके माता-पिता के बीच अच्छे संबंध होते हैं | माता-पिता की भागीदारी किशोरों को स्कूल में अधिक अच्छा प्रदर्शन करने में सहायक होती है | माता-पिता की स्वीकृति और प्रोत्साहन शैक्षणिक योग्यता और सफलता से सकारात्मक रूप से संबंधित है (लक्ष्मी और अरोड़ा 2006) | दौलता (2008) ने बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर घर के वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि घरेलू वातावरण की अच्छी गुणवत्ता का उच्च स्तर की शैक्षिक उपलब्धि के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध लड़कियों की तुलना में लड़कों में अधिक था | शेक (1997) ने अपने अध्ययन में पाया कि चीनी किशोरों के मनोसामाजिक समायोजन, विशेष रूप से सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में पारिवारिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | माता-पिता अपने किशोरों के स्कूली जीवन में कितने शामिल होते हैं और उनका कितना समर्थन करते हैं, यह उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के साथ-साथ उनकी शैक्षणिक सफलता को सीधे प्रभावित कर सकता है (गेकास एंड श्वाल्बे, 1986; हैरिस, 2007)|

परिवार समाजीकरण की पहली और महत्वपूर्ण शाखा होने के कारण बालकों के विकास पर बहुत अधिक प्रभाव डालता है | परवीन, ए. (2007) ने वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के व्यक्तित्व और शैक्षणिक उपलब्धि पर घर के वातावरण के प्रभाव की जांच करने का प्रयास किया | और परिणामों से पता चल कि घर का वातावरण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है | यह पाया गया कि जो छात्र अच्छे घरेलू वातावरण समूह से संबंधित थे, उनका औसत उपलब्धि प्राप्तांक उच्चतम था और सबसे काम औसत उपलब्धि प्राप्तांक ऊन छात्रों के लिए पाया गया जो खराब घरेलू वातावरण समूह से संबंधित थे |

परिवार के सदस्यों विशेष रूप से माता-पिता को अपने किशोरों के साथ गुणात्मक समय बिताना चाहिए और उनके स्वतंत्र महसूस करने के लिए घर का माहौल बनाना चाहिए। यह उन्हें न केवल अपने मानसिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने में मदद करता है, बल्कि उनके लिए सुरक्षित वातावरण भी सुनिश्चित करता है।

स्वभाव से भावुक होने के कारण किशोर बालक अपना शारीरिक और मानसिक समायोजन उचित रूप से स्थापित नहीं कर पाता है | किशोरावस्था में अनेक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं व्यवहारिक परिवर्तन एवं विकास दिखाई देता है| इन परिवर्तनों के कारण उनकी रुचियों और इच्छाओं में काफी परिवर्तन होता है| किशोरावस्था तनाव ,तथा संघर्ष की अवस्था है | इसी कारण इसे समस्याओं की आयु कहा गया है | किशोरावस्था में होने वाले तीव्र शारीरिक, मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक परिवर्तन इन समस्याओं का मुख्य कारण बनते हैं | इन समस्याओं का प्रभावी रूप में निदान किया जाना तभी सम्भव है जब किशोरों का समायोजन उत्तम हो |

संबंधित साहित्य का अध्ययन –

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है | किसी भी क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उससे सम्बन्धित ज्ञान का गहन अध्ययन तथा विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त कर लिया जाये | किशोरों के समायोजन स्तर से सम्बन्धित कुछ अध्ययन निम्नलिखित हैं-

कटरोनेट (1994) ने अध्ययन किया कि माता-पिता द्वारा मनोवैज्ञानिक नियंत्रण अकादमिक समायोजन से नकारात्मक रूप से जुड़ा था , जबकि माता-पिता द्वारा व्यवहार नियंत्रण सकारात्मक रूप से सामाजिक और व्यक्तिगत-भावनात्मक समायोजन से संबंधित था।

शेक (1997) ने अपने अध्ययन में पाया कि चीनी किशोरों के मनोसामाजिक समायोजन, विशेष रूप से सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने में पारिवारिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं |

रायचौधरी तथा बसु (1998) द्वारा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर माता-पिता तथा बच्चों के सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया गया | शोध के निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि माता के लालन पालन का प्रभाव बालक के विद्यालय समायोजन को प्रभावित करता है जिन बच्चों का माता द्वारा उपयुक्त लालन-पालन किया जाता है, उन बच्चों का विद्यालय समायोजन भी उत्तम होता है | अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि शैक्षिक सफलता पर माता तथा पिता दोनों की देखभाल का प्रभाव पड़ता है |

हुसैन (2004) ने विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया | अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि पारिवारिक समायोजन पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया जाता है |

क्रूटर (2004) ने पाया कि जो परिवार एक साथ अधिक गुणवत्ता का समय साझा करते हैं, उनके पारिवारिक संबंध बहुत अच्छे होते हैं जिसके परिणामस्वरूप बेहतर मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समायोजन होता है।

परवीन, ए. (2007) ने वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के व्यक्तित्व और शैक्षणिक उपलब्धि पर घर के वातावरण के प्रभाव की जांच करने का प्रयास किया| और परिणामों से पता चला कि घर का वातावरण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है | यह पाया गया कि जो छात्र अच्छे घरेलू वातावरण समूह से संबंधित थे, उनका

औसत उपलब्धि प्राप्तांक उच्चतम था और सबसे काम औसत उपलब्धि प्राप्तांक ऊन छात्रों के लिए पाया गया जो खराब घरेलू वातावरण समूह से संबंधित थे |

रामप्राबो (2014) ने समायोजन पैटर्न पर पारिवारिक वातावरण के प्रवाह की जांच की। इसके लिए पांडिचेरी के कला और विज्ञान कॉलेजों से स्नातक कार्यक्रमों का अध्ययन करने वाले 70 किशोरों को यादच्छिक रूप से चुना गया था। अध्ययन से पता चला है कि छात्रों के समायोजन पैटर्न पर पारिवारिक वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव है।

बाजपेयी , शुक्ला एवं शर्मा (2015) ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों की समस्याओं पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया | इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि किशोरावस्था के उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक, सामाजिक, व्यावसायिक समस्या में सार्थक अंतर पाया गया तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों में, उच्च पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक संवेगात्मक, सामाजिक, व्यावसायिक समस्याएं पाई गई |

पाठक, स्वाती एवं बाकलीवाल, ममता (2017) ने किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया | इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक व सामाजिक समायोजन समस्याओं पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं में उपरोक्त समस्याएं उच्च पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई |

उद्देश्य - हाईस्कूल स्तर के महिला किशोरों के समायोजन स्तर का पारिवारिक वातावरण के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना |

उपकल्पना - हाईस्कूल स्तर के महिला किशोरों के समायोजन स्तर में पारिवारिक वातावरण के आधार पर सार्थक अंतर नहीं होगा |

विधि :

प्रतिदर्श – अध्ययन हेतु प्रतिदर्श का चयन यादच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया | प्रतिदर्श में 80 महिला किशोरों (40 अनुकूल पारिवारिक वातावरण तथा 40 प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण) को सम्मिलित किया गया | (आयु वर्ग 14-17 वर्ष)

उपकरण : परिचय एवं विवरण :

1. **समायोजन मापनी (AISS)** सिन्हा तथा सिंह (1971) द्वारा निर्मित – किशोर एवं किशोरियों के समायोजन स्तर का मापन प्रो. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी द्वारा किया गया | यह मापनी समायोजन के 3 क्षेत्र संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का मापन करती है | इस मापनी में 60 पद हैं जिनमें संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक समायोजन के पद सम्मिलित हैं | यह समायोजन मापनी व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में प्रयोग की जाती है | मापनी पर कम प्राप्तांक उच्च समायोजन को तथा अधिक प्राप्तांक निम्न समायोजन को प्रदर्शित करते हैं | मापनी की विश्वसनीयता तथा वैधता उच्च स्तर की है |
2. **फैमिली क्लाइमेट स्केल (FCS)** शाह (2001) द्वारा निर्मित – इस परीक्षण को ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक हिंदी भाषी छात्रों पर पयुक्त किया जा सकता है | यह परीक्षण व्यक्तिगत एवं

सामूहिक दोनों प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है| इस परीक्षण को पूर्ण करने के लिए कोई निर्धारित समय सीमा नहीं है किन्तु सामान्यतः इसमें 35-40 मिनट का समय लगता है | इस परीक्षण में 90 कथन हैं जो 10 आयामों पर आधारित हैं - स्वतंत्रता-प्रतिबन्धता, ध्यान-उपेक्षा, प्रभुत्व-समर्पण, स्वीकृति-अस्वीकृति, विश्वास-अविश्वास, विलासिता-परिहार, स्नेही-स्नेहहीन, प्रत्याशा-निराशा, पक्षपात-न्यायोचित, अनियंत्रित संचार-नियंत्रित संचार | इस परीक्षण में 3 प्रतिक्रिया श्रेणी सदैव,कभी-कभी एवं कभी नहीं हैं | निगेटिव कथन को क्रमशः 0,1 तथा 2 अंक तथा पॉजिटिव कथन को 2,1 तथा 0 अंक प्रदान किए जाते हैं | मापनी का विश्वसनीयता गुणाँक 0.76 है |

शोध अभिकल्पना :

शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक द्वि-स्थायी तुलनात्मक समूह अभिकल्पना प्रयोग की गयी है| इसमें दो स्थिर समूहों की आश्रित माप करके प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर अन्तर की सार्थकता की जाँच t परीक्षण द्वारा की गयी है| शोध अध्ययन में प्रतिदर्श N =80 के लिए दोनों समूह के मध्य अंतर की सार्थकता की जाँच t-परीक्षण द्वारा की गयी है |

परिणाम एवं निष्कर्ष -

किशोर छात्राओं के समायोजन मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान तथा t-मान :

Sr. No.	Variables	N	Mean	S.D.	df	't'-Value	Level of Significance
1	अनुकूल पारिवारिक वातावरण	40	30.62	9.53	78	7 .70	0.05 के सार्थकता स्तर पर
2	प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण	40	47.15	9.65			

छात्राओं द्वारा दी गयी प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों से मध्यमान तथा प्राप्तांकों के वर्गों का योग ज्ञात कर t परीक्षण द्वारा t का मान ज्ञात किया गया | प्राप्त मान 7.70 था जो 78 के स्वतंत्रता अंशों पर 0.05 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर t table मान 1.99 से अधिक है | यहाँ 0.05 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है | अतः उपकल्पना स्वीकृत नहीं होती है | अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि हाईस्कूल स्तर के किशोरियों के समायोजन स्तर में पारिवारिक वातावरण के संबंध में सार्थक अन्तर होता है |

अनुकूल पारिवारिक वातावरण तथा प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण आधार पर किए गए अध्ययन से ज्ञात हुआ कि किशोरियों के प्राप्तांकों में बहुत अधिक भिन्नता थी | अनुकूल पारिवारिक वातावरण में रहने वाली छात्राओं का समायोजन स्तर बहुत अधिक संतोषजनक था | ऐसे परिवारों से संबंध रखने वाले किशोर समायोजन के प्रत्येक क्षेत्र में उच्च स्तर को प्राप्त करते हैं | इस प्रकार की उच्च समायोजन क्षमता इन किशोरों को जीवन की विभिन्न बाधाओं को सरलता से पार करने में मदद करती है | जिससे किशोरावस्था में आने वाली चुनौतियों को भी सरलता व सहजता के साथ स्वीकार कर पाते हैं | इसके विपरीत प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण से संबंधित महिला किशोरों का संयोजन अधिकतर क्षेत्रों में असंतोषजनक था | ऐसे किशोरों में किशोरावस्था की चुनौतियों को सकारात्मक रूप से स्वीकार करने की क्षमता विकसित नहीं हो पाती जिस कारण से वे किशोर कई प्रकार की मानसिक समस्याओं से भी

ग्रसित हो सकते हैं | किशोरों का व्यवहार, उपलब्धियाँ एवं जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण कितनी उच्च श्रेणी का होगा यह काफी सीमा तक किशोरों के उत्तम समायोजन पर निर्भर करता है |

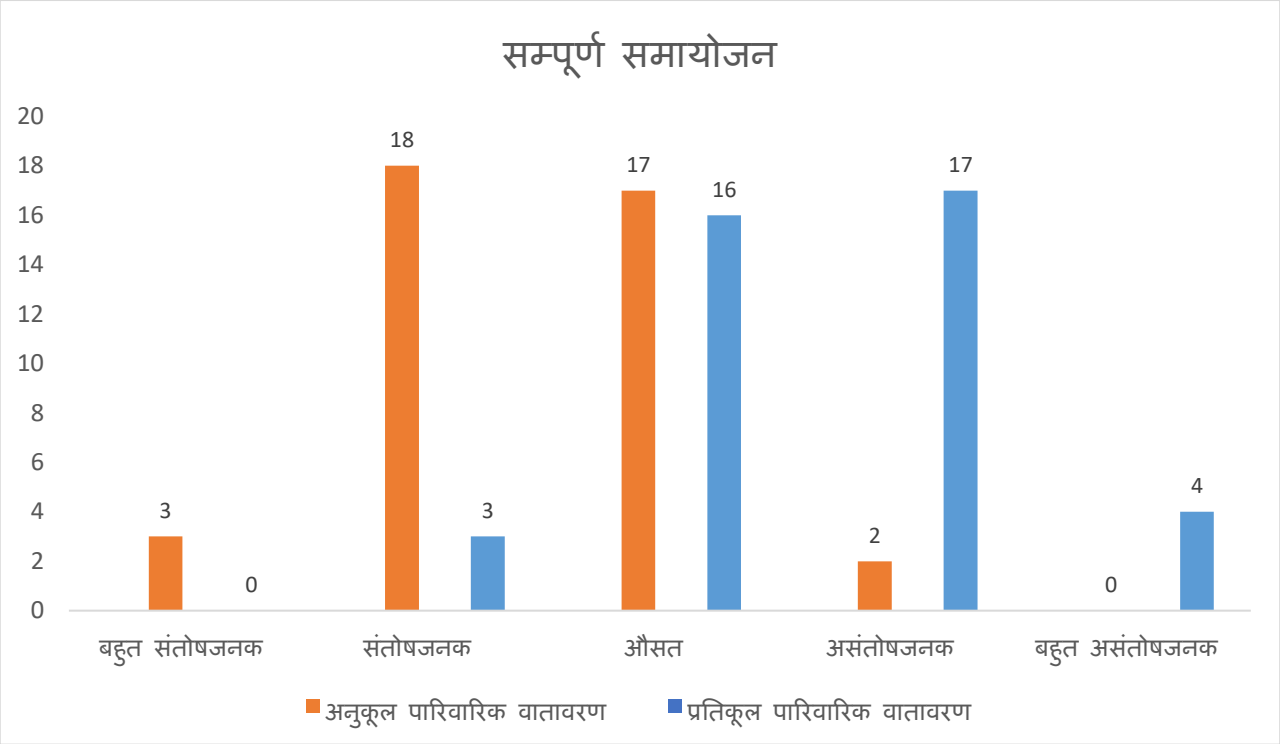

ग्राफ में प्रदर्शित आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अनुकूल पारिवारिक वातावरण तथा प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण से संबंधित महिला किशोरों के समायोजन में काफी भिन्नता पाई गई | जो छात्राएं अनुकूल पारिवारिक वातावरण से संबंधित थी उनका समायोजन स्तर अधिक अच्छा प्राप्त हुआ | जिसमें **3** छात्राओं का समायोजन **बहुत संतोषजनक** , **18** छात्राओं का समायोजन **संतोषजनक , 17** छात्राओं का समायोजन **औसत** तथा केवल **2** छात्राओं का समायोजन **असंतोषजनक** प्राप्त हुआ | **किसी भी छात्रा का समायोजन स्तर बहुत असंतोषजनक नहीं था |**

जो छात्राएं प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण से संबंधित थी उनका समायोजन स्तर अधिक संतोषजनक प्राप्त नहीं हुआ | इसमें किसी भी छात्रा का समायोजन स्तर **बहुत संतोषजनक** नहीं था **|** केवल **3** छात्राओं का समायोजन **संतोषजनक , 16** छात्राओं का समायोजन **औसत** तथा **17** छात्राओं का समायोजन **असंतोषजनक** तथा **4** छात्राओं का समायोजन **बहुत असंतोषजनक** प्राप्त हुआ |

परिणामों से स्पष्ट है कि प्रतिकूल पारिवारिक वातावरण से संबंधित छात्राओं का समायोजन निम्न था जबकि अनुकूल पारिवारिक वातावरण से संबंधित छात्राओं का समायोजन उच्च स्तर का था |

रायचौधरी तथा बसु (1998) द्वारा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर माता-पिता तथा बच्चों के सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन किया गया | शोध के निष्कर्ष रूप में ज्ञात हुआ कि माता के लालन पालन का प्रभाव बालक के विद्यालय समायोजन को प्रभावित करता है जिन बच्चों का माता द्वारा उपयुक्त लालन-पालन किया जाता है, उन बच्चों का विद्यालय समायोजन भी उत्तम होता है | अध्ययन द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि शैक्षिक सफलता पर माता तथा पिता दोनों की देखभाल का प्रभाव पड़ता है |

हुसैन (2004) ने विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया | अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि पारिवारिक समायोजन पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया जाता है |

पाठक, स्वाती एवं बाकलीवाल, ममता (2017) ने किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया | इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक व सामाजिक समायोजन समस्याओं पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पाया गया तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं में उपरोक्त समस्याएं उच्च पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई |

उपरोक्त अध्ययन भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि पारिवारिक वातावरण किशोरों के समायोजन स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित करता है |

पारिवारिक वातावरण के आधार पर किशोरियों के समायोजन स्तर के तुलनात्मक अध्ययनों के परिणामस्वरूप, शून्य उपकल्पना को स्वीकृत न करते हुए यह कहा जा सकता है कि **"हाईस्कूल स्तर के महिला किशोरों में पारिवारिक वातावरण के आधार पर समायोजन स्तर में सार्थक अंतर होता है |"**

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Adam (2004). Beyond Quality: Parental and Residential Stability and Children"s Adjustment,School of Education and Social Policy, Northwestern University, pp. 56-60
2. Ahuja M, Goyal S 2005. Study of achievement and aspirations of adolescents in relation to parental involvement. Indian Journal of Applied Psychology, 42: 19-26.
3. Bajpeyi, Aashish, Shukla, Har Govind & Sharma, Bharti (2015). "Kishorawastha ke vidyarthiyo ki samsyaon par parivarik vatavaran ke prabhav ka adhyyan", samajik sodh yojna, volume-III, edition-IV, October(2015), page no. 83-89
4. Cutronaet (1994). Middle childhood antecedents to progressions in male substance use: An ecological analysis of risk and protection. Journal of Adolescent Research, Vol. No. 14, pp175–205.
5. Hossain, Akhtar A.B.M. (2004) " Factors influencing home adjustment of students",Asian journal of psychology and education, vol. 37, No.7-8, 23-27.
6. Hurlock,B. (2009). *Developmental psychology : A life span approach* (5th ed.). New Delhi, Tata McGraw-Hill Education Private Limited.
7. Raju & Rahamtulle (2006). Adjustment problem among school students journal of Indian academy to applied psychology, Vol. No.33 (1), pp. 45-50
8. Singh, A.K. (2010). *Abnormal Psychology*. Delhi, Motilaal Banarsidas Publication.
9. Singh, A.K. (2012). *Advanced General Psychology*. Delhi, Motilaal, Banarsidas Publication.
10. Shek DTL 1997. Family environment and adolescent psychological wellbeing, school adjustment, and problem behavior: A pioneer study in a Chinese context. Journal of Genetic Psychology, 158(4): 467- 479.
11. Srivastva,D.N. & Verma,P. (1989). *Advanced Experimental Psychology*. Agra, Vinod Pustak Mandir Publication.
12. V. Ramaprabou. (2014). "The effect of family environment on the adjustment patterns of adolescents" Department of Psychology, Tagore Arts College, Puducherry, India

ISSN: 2347-3215 Volume 2 Number 10 (October-2014) pp. 25-29.

Internet sources:

1. www.ijcrar.com
2. http://psycnet.apa.org/Journals/edu/94/4/795/
3. http://www.ukessays.com
4. http://dspace.library.uu.nl>handle

*1 सहायक प्रवक्ता (मनोविज्ञान विभाग)
*2 शोध छात्रा (मनोविज्ञान विभाग)